दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
DSSSB TGT & PGT
ROJGAR
ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
सन्धि
Part -7
LIVE 27-03-2024 05:00 PM

सर्वादेशविधानार्थं परिभाषासूत्रम्

अनेकाल् शित्सर्वस्य १।१।५५॥

अनेक अल् वाला आदेश और शित् आदेश सम्पूर्ण के स्थान पर होते हैं।

60

अन्त्यादेशविधानार्थं परिभाषासूत्रम्

ङिच्च १।१।५३॥

ङिदनेकालप्यन्त्यस्यैव स्यात्।

ङित् आदेश अनेकाल् होने पर भी अन्त्य के ही स्थान पर होता है

अवङ्-आदेशविधायकं विधिसूत्रम्

अवङ् स्फोटायनस्य ६।१।१२३॥

पदान्ते एङन्तस्य गोरवङ् वाऽचि।

गवाग्रम्, गोऽग्रम्। पदान्ते किम्? गवि।

गो + अग्रम

अवङ्

ग् अव अग्रम

अवङ्-आदेशविधायकं विधिसूत्रम्

इन्द्रे च ६।१।१२४॥

गोरवङ् स्यादिन्द्रे। गवेन्द्रः।

गो + इन्द्र

गवेन्द्र

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

प्लुतादेशविधायकं विधिसूत्रम्

दूराद्धूते च ८।२।८४।।

दूरात्सम्बोधने वाक्यस्य टेः प्लुतो वा।

दूर से सम्बोधन करने में प्रयुक्त जो वाक्य, उसके टि को विकल्प से प्लुत होता है।

सभी प्लुतों को वैकल्पिक माना गया है। इस सूत्र से एकमात्रिक ह्रस्व और

प्रकृतिभावविधायकं विधिसूत्रम्

प्लुतप्रगृह्या अचि नित्यम् ६।१।१२५॥

एतेऽचि प्रकृत्या स्युः । आगच्छ कृष्ण३ अत्र गौश्चरति ।

प्लुत/प्रगृह्य + अच् = प्रकृतिभाव

प्रगृह्यसंज्ञाविधायक संज्ञासूत्रम्

ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् १।१।११॥

ईदूदेदन्तं द्विवचनं प्रगृह्यं स्यात्।

हरी एतौ। विष्णू इमौ । गङ्गे अमू ।।

प्रगृह्यसंज्ञाविधायक संज्ञासूत्रम्

अमू + आसाते

अदसो मात् १।१।१२॥

अस्मात् परावीदूतौ प्रगृह्यौ स्तः।

अमी ईशाः। रामकृष्णावमू आसाते। मात् किम् ? अमुकेऽत्र ।

अदस् शब्द के मकार से परे ईकार और ऊकार प्रगृह्यसंज्ञक होते हैं।

निपातसंज्ञाविधायक संज्ञासूत्रम्

चादयोऽसत्त्वे १।४।५७॥

अद्रव्यार्थाश्चादयो निपाताः स्युः।

सत् - द्रव्य

च हा, ता

निपातसंज्ञाविधायक संज्ञासूत्रम्

प्रादयः १।४।५८॥

एतेऽपि तथा।

प्रगृह्यसंज्ञाविधायक संज्ञासूत्रम्

निपात एकाजनाङ् १।१।१४॥

एकोऽज् निपात आवर्जः प्रगृह्यः स्यात्।

इ इन्द्रः। उ उमेशः। वाक्यस्मरणयोरङित्। आ एवं नु मन्यसे।

आ एवं किल तत्। अन्यत्र ङित्, आ ईषदुष्णम् ओष्णम्।

५३- चादयोऽसत्त्वे । चः आदिर्येषां ते चादयः, बहुव्रीहिः। न सत्त्वम् असत्त्वम्, तस्मिन् असत्त्वे। चादयः प्रथमान्तम्, असत्त्वे सप्तम्यन्तं, द्विपदमिदं सूत्रम् । प्राग्रीश्वरान्निपाताः से निपाताः का अधिकार चल रहा है।

द्रव्य अर्थ न होने पर च आदि निपातसंज्ञक होते हैं।

लिङ्गसङ्ख्यान्वयित्वं द्रव्यत्वम्। जिस शब्द में लिङ्ग और सङ्ख्या का अन्वय अर्थात् सम्बन्ध हो अथवा जिस शब्द में लिङ्ग और सङ्ख्या हो, उसे द्रव्य कहते हैं। उससे भिन्न अद्रव्य हैं। जैसे च, वा, हि, आ, ये अद्रव्य हैं और पशु, मनुष्य, पुस्तक, घर आदि द्रव्य हैं। यह सूत्र चादिगण पठित शब्दों की निपातसंज्ञा करता है, यदि उनमें द्रव्यवाचकता न हो तो। निपातसंज्ञा के अनेक फल हैं, उनमें से एक फल प्रगृह्यसंज्ञा भी है।

५४- प्रादयः। प्रः आदिर्येषां ते प्रादयः, बहुव्रीहिः। चादयोऽसत्त्वे से असत्त्वे की अनुवृत्ति एवं प्राग्रीश्वरान्निपाताः से निपाताः का अधिकार चल रहा है।

द्रव्य अर्थ न होने पर प्र आदि भी निपातसंज्ञक होते हैं।

प्रादि उपसर्गाः क्रियायोगे सूत्र में बताये जा चुके हैं। प्रादि की निपातसंज्ञा होने से अव्ययसंज्ञा भी हो जायेगी और अव्यय के बाद सुप् का लुक् हो सकेगा।

५५- निपात एकाजनाङ्। एकश्चासौ अच्- एकाच्, कर्मधारयः। न आङ्- अनाङ, नञ्तत्पुरुषः। ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् से प्रगृह्यम् की अनुवृत्ति आती है।

आङ् को छोड़कर मात्र एक अच् वाला निपात प्रगृह्यसंज्ञक होता है।

चादिगण में आ तथा प्रादिगण में आङ् पढ़े गये हैं। इन दोनों की क्रमशः चादयोऽसत्त्वे तथा प्रादयः से निपातसंज्ञा होती है। इस प्रकार से दो निपात माने गये हैं।

प्रगृह्यसंज्ञाविधायकं संज्ञासूत्रम्

ओत् १।१।१५॥

ओदन्तो निपातः प्रगृह्यः स्यात्। अहो ईशाः।

ओत्। ओत् प्रथमान्तम् एकपदमिदं सूत्रम्। निपात एकाजनाङ् से निपातः तथा ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् से प्रगृह्यम् की अनुवृत्ति आती है। यह पद निपातः का विशेषण है। अतः येन विधिस्तदन्तस्य से तदन्तविधि होकर ओदन्त ऐसा अर्थ बनता है।

ओकारान्त निपात की प्रगृह्यसंज्ञा होती है।

वैकल्पिकप्रगृह्यसंज्ञाविधायकं संज्ञासूत्रम्

सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे १।१।१६ ॥

शाकल्यस्य + इतौ + अनार्षे

सम्बुद्धिनिमित्तक ओकारो वा प्रगृह्योऽवैदिक इतौ परे।

विष्णो इति, विष्ण इति, विष्णविति ।

सम्बुद्धौ शाकल्यस्येतावनार्षे। ऋषिर्वेदः, तत्र भवः आर्षः, न आर्षः अनार्षः। सम्बुद्धौ सप्तम्यन्तं, शाकल्यस्य षष्ठ्यन्तम्, इतौ सप्तम्यन्तम्, अनार्षे सप्तम्यन्तम्, अनेकपदमिदं सूत्रम्। ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् से प्रगृह्यम् की अनुवृत्ति आती है।

अवैदिक इति शब्द के परे होने पर सम्बुद्धि निमित्तक ओकार विकल्प से प्रगृह्यसंज्ञक होता है।

सम्बुद्धि ओ + इति (अवैदिक) = प्रगृह्य (लोपः शाकल्यस्य)

संबोधन

अर्थ

विष्णो + इति

विष्णो इति / विष्णव् इति / विष्णविति

विष्ण इति

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

वकारादेशविधायकं विधिसूत्रम्

मय उञो वो वा ८।३।३३॥

मयः परस्य उञो वो वाऽचि। किम्वुक्तम्, किमु उक्तम्।

मय उञो वो वा। मयः पञ्चम्यन्तम्, उञः षष्ठ्यन्तं, वः प्रथमान्तं, वा अव्ययपदम्, अनेकपदमिदं सूत्रम्। ङमो ह्रस्वादचि ङमुण् नित्यम् से अचि की अनुवृत्ति आती है। मय् से परे उञ् (उकार) के स्थान पर वकार आदेश होता है अच् परे होने पर।

यह सूत्र प्रकृतिभाव को बाधकर के वैकल्पिक वकार आदेश करने के लिए प्रवृत्त होता है। आदेश न होने के पक्ष में प्रकृतिभाव ही होगा। उञ् का ञकार इत्संज्ञक है, अतः उ ही दीखता है।

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

ह्रस्वसमुच्चितप्रकृतिभावविधायकं विधिसूत्रम्

इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च ६।१।१२७॥

चक्रिन् + सु = चक्री

दण्डिन् = दण्डी

पदान्ता इको ह्रस्वा वा स्युरसवर्णेऽचि । ह्रस्वविधानसामर्थ्यान्न स्वरसन्धिः। चक्रि अत्र, चक्र्यत्र। पदान्ता इति किम्? गौयौ।

पदान्त इक् + अच् (असवर्ण) = ह्रस्व (विकल्प से)

चक्री + अत्र = चक्रि अत्र / चक्र्यत्र

गौ + औ

इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च । न सवर्णः असवर्णः, तस्मिन् असवर्णे, नञ्तत्पुरुषः। एङः पदान्तादति से विभक्ति और वचन का विपरिणाम करके पदान्ताः और इको यणचि से अचि की अनुवृत्ति आती है।

असवर्ण अच् के परे होने पर पदान्त में विद्यमान इक् को ह्रस्व होता है।

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

वैकल्पिकद्वित्वविधायकं विधिसूत्रम्

अचो रहाभ्यां द्वे ८।४।४६॥

अचः पराभ्यां रेफहकाराभ्यां परस्य यरो द्वे वा स्तः।

गौय्यौं। वार्तिकम् - न समासे। वाप्यश्वः।

अचो रहाभ्यां द्वे। रश्च हश्च रहौ, ताभ्यां रहाभ्याम्, द्वन्द्वः। अचः पञ्चम्यन्तं, रहाभ्यां पञ्चम्यन्तं, द्वे प्रथमान्तं, त्रिपदमिदं सूत्रम्। यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा से वा की अनुवृत्ति आती है।

अच् से परे जो रेफ और हकार, उससे परे यर् का विकल्प से द्वित्व होता है।

ह्रस्वसमुच्चितप्रकृतिभावविधायकं विधिसूत्रम्

ऋत्यकः ६।१।१२८॥

ऋति परे पदान्ता अकः प्राग्वद्वा। ब्रह्म ऋषिः, ब्रह्मर्षिः।

पदान्ताः किम्? आच्र्छेत्।

इत्यच्सन्धिः ॥२॥

अक् + ऋ

ब्रह्मा + ऋषि

ब्रह्म ऋषि / ब्रह्मर्षि

ऋत्यकः। ऋति सप्तम्यन्तम्, अकः प्रथमान्त, द्विपदमिदं सूत्रम्। एङः पदान्तादति से विभक्ति और वचन का विपरिणाम करके पदान्ताः की, इकोऽसवर्णे शाकल्यस्य ह्रस्वश्च से ह्रस्वः और शाकल्यस्य की अनुवृत्ति आती है। प्राग्वद् - पहले की तरह हो। ह्रस्व ऋकार के परे होने पर पदान्त अक् को ह्रस्व होता है।